दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

(Hindi Literature)

टेस्ट-4

(प्रश्न पत्र-II)

DTVF / OPT-23 **HL-2304**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time Allowed: Three Hours*	*अधिकतम अंक : 250* *Maximum Marks : 250*

नाम (Name): Neelesh Ahirwar

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.): _____

ई-मेल पता (E-mail address): _____

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 13/07/2023 M.N. Delhi

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2023]:

0	4	1	4	6	2	9

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): _____ टिप्पणी (Remarks): _____

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - क

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये: **10 × 5 = 50**

(क) मित्र बनकर रहना स्त्री-पुरुष बनकर रहने से कहीं सुखकर है। तुम मुझसे प्रेम करते हो, मुझ पर विश्वास करते हो, और मुझे भरोसा है कि आज अवसर आ पड़े, तो तुम मेरी रक्षा प्राणों से करोगे। तुममें मैंने अपना पथ-प्रदर्शक ही नहीं, अपना रक्षक भी पाया है। मैं भी तुमसे प्रेम करती हूँ, तुम पर विश्वास करती हूँ और तुम्हारे लिए कोई ऐसा त्याग नहीं है, जो मैं न कर सकूँ। और परमात्मा से मेरी यही विनय है कि वह जीवनपर्यन्त मुझे इसी मार्ग पर दृढ़ रखें। हमारी पूर्णता के लिए, हमारी आत्मा के विकास के लिए और क्या चाहिए! अपनी छोटी-सी गृहस्थी, अपनी आत्माओं को छोटे-से पिंजड़े में बन्द करके, अपने दुःख-सुख को अपने ही तक रखकर, क्या हम असीम के निकट पहुँच सकते हैं? वह तो हमारे मार्ग में बाधा ही डालेगा। कुछ विरले प्राणी ऐसे भी हैं, जो पैरों में यह बेड़ियाँ डालकर भी विकास के पथ पर चल रहे हैं।

संदर्भ प्रस्तुत गद्यावतरण 1936 ई. में प्रेमचंद द्वारा रचित उपन्यास गोदान से उद्धृत है।

प्रसंग उपरोक्त पंक्तियों में मालती-मेहता संवाद के माध्यम से प्रेम दृष्टि का सूक्ष्म अंकन प्रस्तुत किया गया है।

व्याख्या प्रेमचंद दिखाते हैं कि जीवन में मित्रता का महत्व स्त्री-पुरुष संबंधों से अधि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

है। मालती कहती है प्रेम में विश्वास, त्याग सब कुछ है। किंतु इसके बावजूद भी प्रेम के एक ऐसे रूप में बंधना जिसमें प्रेम मार्ग में ही बाधा उत्पन्न हो व्यर्थ व निरर्थक होगा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष

① सरल व सहज हिन्दुस्तानी भाषा शैली।
② विराम चिन्हों व प्रश्नवाचक चिन्हों का सार्थक प्रयोग।
③ प्रेम के प्रति आधुनिक नज़रिया दिखाया गया है।
④ स्त्री-पुरुष संबंधों के मध्य यह स्वतंत्रता का संबंध आज भी प्रासंगिक है।
⑤ प्रेम मनोविज्ञान का सूक्ष्म विश्लेषण प्रभावशाली रूप से व्यक्त किया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) इस नयी सभ्यता का आधार धन है। विद्या और सेवा और कुल और जाति सब धन के सामने हेय हैं। कभी-कभी इतिहास में ऐसे अवसर आ जाते हैं, जब धन को आन्दोलन के सामने नीचा देखना पड़ता है, मगर इसे अपवाद समझिये। मैं अपनी ही बात कहती हूँ। कोई गरीब औरत दवाखाने में आ जाती है, तो घण्टों उससे बोलती तक नहीं, पर कोई महिला कार पर आ गयी, तो द्वार तक जाकर उसका स्वागत करती हूँ। और उसकी ऐसी उपासना करती हूँ, मानो साक्षात् देवी है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ: उपरोक्त पंक्तियाँ 1936 ई में रचित महाकाव्यात्मक उपन्यास 'गोदान' से ली गई हैं, जिसकी रचना शिखर पुरुष 'प्रेमचंद' ने की है।

प्रसंग: दी गई पंक्तियों में प्रेमचंद ने उभरती हुई पूंजीवादी व्यवस्था का सूक्ष्म विश्लेषण किया है जिसमे धन केन्द्रीय तत्व है।

व्याख्या: चरित्र के माध्यम से प्रेमचंद ने बताया है उभरते हुए पूंजीवाद से धन का महत्व बढ़ गया है। इसके समक्ष विद्या, कुल, जाति सब निरर्थक व महत्वहीन है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

ऐसा अपवाद ही होता है कि धन की सत्ता कमजोर पड़ जाए किंतु मुख्यतः सभी व्यवहारों में, सभी संबंधों में धन ही निर्णायक भूमिका निभाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष:

① सरल व प्रभावमयी हिन्दुस्तानी भाषा।

② तद्भव व देशज शब्दों का मिश्रण।

③ पूंजीवादी व्यवस्था का विवेचन।

④ वर्तमान में भी बढ़ते उपभोक्तावाद बाजारवाद में धन की सत्ता ही महत्व रखती है।

⑤ प्रेमचंद ने उदाहरण शैली का शानदार प्रयोग किया है।
यथा - "कोई गरीब दवाखाने में क्या जाएगा..."

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) कवित्व वर्णमय चित्र है, जो स्वर्गीय भावपूर्ण संगीत गाया करता है! अन्धकार का आलोक से, असत् का सत् से, जड़ का चेतन से, और वाह्य जगत् का अन्तर्जगत् से संबंध कौन कराती है? कविता ही न!

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ: दी गई पंक्तियाँ सांस्कृतिक भावबोध के ~~पुरोधा~~ पुरोधा, छायावादी रचनाकार जयशंकर प्रसाद कृत 'स्कंदगुप्त' नाटक से उद्धृत है। इसकी रचना 1928 में की गई थी

प्रसंग: यहाँ पर मातृगुप्त ने कविता, कवि व संसार में इनके महत्व पर प्रकाश डाला है।

व्याख्या: मातृगुप्त कहता है कि कविता ऐसा चित्र है जिसके माध्यम से भावों को सहज रूप से अभिव्यक्ति मिलती है। इस संसार में अंधकार को प्रकाश, असत्य को सत्य का मार्ग तथा स्थास्थितिवादिता से युक्त मानव को प्रगतिशीलता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

व चेतना प्रदान करने का काम भी कविता ही करती है।

यह कविता ही है जो मनुष्य के भावों का संबंध बाह्य प्रकृति से कराती है।

विशेष:

① संसार में कविता के महत्व को बताया गया है।

② भाषा तत्समी तथा संस्कृतनिष्ठ है उदा० वर्णमय, स्वर्गीय आदि

③ आचार्य शुक्ल ने अपने निबंध 'कविता क्या है' में कविता को भावयोग की संज्ञा दी है तथा ज्ञानयोग व कर्मयोग के समकक्ष बताया है।

④ विरामचिन्ह व प्रश्नवाचकता का उत्तम प्रयोग प्रलाप की विशेषता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) जीवन का कोई अनुभव स्थायी और चिरन्तन नहीं। जीवन की स्थिति समय में है और समय प्रवाह है। प्रवाह में साधु-असाधु, प्रिय-अप्रिय सभी कुछ आता है। प्रवाह का यह क्रम ही सृष्टि और प्रकृति की नित्यता है। जीवन के प्रवाह में एक समय असाधु, अप्रिय अनुभव आया इसलिये उस प्रवाह से विरक्त होकर जीवन की तृषा को तृप्त न करना केवल हठ है।

संदर्भ: व्याख्येय गद्यावतरण प्रगतिवादी धारा के प्रतिनिधि रचनाकार यशपाल द्वारा 1945 में रचित 'दिव्या' उपन्यास से लिया गया है।

प्रसंग: उपरोक्त गद्यांश में मारिश दिव्या को जीवन के प्रति पुनः विरक्ति भाव त्याग कर सहजता से जीने हेतु प्रेरित कर रहे हैं।

व्याख्या:

मारिश कहते हैं कि इस परिवर्तनशील जगत में कुछ भी स्थायी नहीं है। जीवन का सत्य ही गति में है अर्थात् परिवर्तन ही सत्य है। ऐसे में मनुष्य को

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संघर्ष पथ के दौरान सफलता-विफलता सभी पक्षो से गुजरना पड़ता है। ऐसा नहीं कि एक विफलता से हम जीवन के प्रति विरक्त हो जाए। बल्कि हमें निरंतर ~~प्रयत्न~~ प्रयत्नशील रहना चाहिए।

विशेष:

① यशपाल ने मारिश के माध्यम से जीवन व स्थायित्व संबंधी सूक्ष्म दृष्टिकोण का प्रतिपादन किया है।

② बौद्ध धर्म के अनुसार भी संसार परिवर्तनशील है।

③ भाषा तत्समी है उदा० प्रवाह, सृष्टि आदि

④ विराम चिन्हों, का प्रयोग अच्छा है।

⑤ ऐतिहासिक भौतिकवाद नज़रिया स्पष्ट किया गया है।

⑥ सूत्र वाक्य
"जीवन का कोई अनुभव स्थायी और चिरन्तन नहीं।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) इसे ले तो जा रहा हूँ, पर इतना कहे देता हूँ, आप भी समझा दें उसे- कि रहना हो तो दासी बनकर रहे। न दूध की, न पूत की। हमारे कौन काम की, पर हाँ, औरतिया की सेवा करे, उसका बच्चा खिलावे, झाड़ू, बुहारु करे तो दो रोटी खाय, पड़ी रहे। पर कभी उससे जबान लड़ायी तो खैर नहीं। हमारा हाथ बड़ा जालिम है। एक बार कूबड़ निकला, तो अगली बार प्रान ही निकलेगा।

संदर्भ एवं प्रसंग

प्रस्तुत गद्यावतरण में रचनाकार ने पुरुषवादी पितृसत्तात्मक मानसिकता का चित्रण करते हुए कथन को कहलवाया है।

व्याख्या:

यहाँ चरित्र आवेश के भाव में चेतावनी देता है कि अगर उसे साथ में रहना है तो दासी बनकर जीवन व्यतीत करे। उससे न तो पुत्र की प्राप्ति हुई न ही कुछ और। आगे से औरत की सेवा करे तथा घर के काम करे लेकिन मुह फुलाने से प्राण निकाल लिए जाएंगे।

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष :

① नारी के प्रति संकीर्ण सोच प्रदर्शित हुई है

② पितृसत्तात्मक विचारों का प्रक्षेपण
- चरित्र द्वारा।

③ सिमोन द बउआ (प्रसिद्ध नारीवादी चिंतक) ने भी कहा है कि - "औरत पैदा नहीं होती औरत बनाई जाती है।

④ दिव्या उपन्यास में भी नारी के प्रति भोगमूलक, शोषणपरक दृष्टिकोण पर मारिश ने चोट करते हुए कहा -
" नारी प्रकृति के विधान से नहीं; समाज के विधान से भोग्य है।'

⑤ मिश्रित शब्दावली प्रयोग
देशज - औरतिया, खिलावे आदि।
फारसी - ज़ालिम, ज़बान आदि।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'अपने उपन्यासों एवं कहानियों में प्रेमचंद की बुनियादी चिन्ताएँ अपने समय की भी हैं और भविष्य की भी हैं।' इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'प्रेमचंद की कहानियों में मनोविज्ञान का सुंदर प्रयोग हुआ है।' आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रेमचंद हिन्दी कहानी व उपन्यास परंपरा के शीर्ष पुरुष हैं। उनकी सभी रचनाओं मनोविज्ञान का सुन्दर प्रयोग मिलता है। उनका यह मनोविज्ञान, सामाजिक मनोविज्ञान कहलाता है।

उनकी ~~कहानियों~~ कहानियों यथा- शतरंज सारंधा, बड़े घर की बेटी, मेरा दुश्मन, गिला आदि सभी मनोविज्ञान के अनेक सूक्ष्म तत्व समाहित हैं।

प्रेमचंद ने प्रायः मनोविज्ञान का प्रयोग सभी वर्गों के लिए किया है जैसे पूस की रात में किसान का मनोविज्ञान, सद्गति व कफन में बेरोजगारी व गरीबी से व्यक्तियों का मनोविज्ञान, ईदगाह में बच्चों का मनोविज्ञान बतलाया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

ईदगाह में हामिद के माध्यम से बताया है कि कैसे बिना माता-पिता तथा अभाव में पले-बढ़े बच्चों पर शीघ्रता से समझ आ जाती है, उनका बचपन छिन जाता है। इसका उदाहरण है कि हामिद के दोस्तों द्वारा खिलौने लेने के बावजूद भी उसका चीमटा खरीदना।

ऐसा ही पूस की रात में किसान जीवन में जो समस्याएँ दिन प्रतिदिन आती है उनका सूक्ष्म अंकन है।

प्रेमचन्द की यही सूक्ष्म दृष्टि भारतीय परिवार व्यवस्था तक भी पहुँचती है। 'बड़े घर की बेटी' कहानी में स्त्री मनोविज्ञान तथा समाज के नज़रियें को दिखाया है तो वहीं अलग्योझा कहानी में संयुक्त परिवार में उत्पन्न जटिलताओं को।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

बूढ़ी काकी में वे वृद्ध जीवन तथा वृद्ध वर्ग के मनोविज्ञान को बताते हैं- कि कैसे बुढ़ापे में बचपन का पुनरागमन होता है।

वहीं 'मेरा दुश्मन' 'मिलाप' में आधुनिक समाज में स्त्री-पुरुष संबंधों में दोनों के मनोविज्ञान का अंकन है।

इस प्रकार प्रेमचंद अपनी कहानियों में सभी वर्गों के मनोविज्ञान का बेहद प्रभावशाली तरीके से यथार्थरूपी वर्णन करते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'भोलाराम का जीव' कहानी स्वातंत्र्योत्तर भारत की कार्यपालिका में व्याप्त भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करती है।' - विवेचन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'भारत-दुर्दशा' नाटक के रचना-उद्देश्य पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

भारत दुर्दशा नाटक भारतेन्दु द्वारा 1875 ई० में रचा गया है था। यह समय तीव्र संक्रमण का काल था ऐसे में भारतीय जनता के समक्ष राष्ट्रीय चेतना व एकता के भाव को प्रस्तुत करने के उद्देश्य ~~सह~~ रस नाटक का सूत्रपात हुआ।

भारतेन्दु जिस युग में थे उस समय जनता तथा वि बुद्धिजीवी वर्ग अपने कर्तव्यों से कटा हुआ था। चारों ओर से दुर्दशा के चित्र-ही-चित्र नजर आते हैं।

भारत दुर्दशा में भारतेन्दु अतीत के गौरवमयी इतिहास को जनता के समक्ष प्रस्तुत करते हैं जिससे जनता प्रेरणा ले सके वे कहते हैं -

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

योगी के गीत के माध्यम से -

"सबसे पहिले जेहि ईश्वर धन बल दीनों,
सबसे पहिले जेहि सभ्य विधाता कीनों।"

इस गौरवमयी इतिहास के बावजूद क्या कारण है वर्तमान भारत दुर्दशा से ग्रस्त है। इस प्रश्न के कारणों की इन्होंने सम्यक खोज की है।

वे पाते हैं कि भारतीय जनता धर्म, अशिक्षा, मदिरा, आलस्य जाति व्यवस्था से ग्रस्त है, जो कि पतन का द्वार है। इसके अतिरिक्त भारत दुर्दैव को 'अंग्रेजी शासन' के प्रतीक रूप में शोषण का कारण बताया है जहाँ 'हाकिमेच्छा नामक दफा' अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का दमन है। इसके साथ ही धन निर्गमन, रिक्त की समस्या

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आदि व्याप्त है।

इस प्रकार संक्रमणकालीन भारत में जो दुर्दशा फैली हुई है कि देखते लायक नहीं है - "हा! हा! भारत दुर्दशा न देखी जाई"।

समाज में व्याप्त अंधकार, अशिक्षा, आलस्य को भगाने तथा नेतृत्व वर्ग की निष्क्रियता, कायरता को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत कर हालातों के कारणों को स्पष्ट किया गया है।

भारतेंदु का रचना उद्देश्य यह है कि घोर अंधविश्वास व आलस्य में डूबे समाज को स्थितियों से यथार्थ रूप में जागृत किया जा सके। अपनी इसी प्रगतिशीलता के कारण 150 साल पश्चात भी यह ड्रामा आज प्रासंगिक है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिन्दी उपन्यास की विकासयात्रा में 'महाभोज' उपन्यास के महत्त्व के कारणों का निर्देश कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आजादी के उपरांत 1979 में मन्नू भण्डारी द्वारा महाभोज की रचना की गई। लगभग 1850 से प्रारंभ (पश्चिम में) उपन्यास परंपरा तथा भारतीय ~~स~~ हिन्दी उपन्यास परंपरा में इसका महत्वपूर्ण योगदान है।

इसके पूर्व के उपन्यासों में समाज का यथार्थवादी चित्रण (प्रेमचंद के यहाँ तो आर्थिक व सामाजिक शोषण तंत्र को यशपाल के उपन्यासों से समझा जा सकता है।

किंतु इसके ~~बावजूद~~ बावजूद ऐसा उपन्यास जो समग्रता से भारतीय राजनीति को समेटता हो, उसके यथार्थ रूप को प्रस्तुत करता हो अनुपस्थित था।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यही अनुपस्थिति का रिक्त स्थान महाभोज ने भरा। महाभोज में ~~आजादी~~ आजादी के उपरांत कैसे लोकतंत्र भीड़तंत्र में बदला, आजादी के मूल्यों का कैसे मखौल बनाया गया, सामाजिक जीवन में सकारात्मक परिवर्तनों को कैसे रोका गया की स्पष्ट अभिव्यक्ति है।

~~महाभो~~ महाभोज सरोहा नामक स्थान के कथानक को लेकर राजनीति में भ्रष्टाचार, अपराधियों का संरक्षण, नेतृत्ववर्ग की अवसरवादिता, संवेदनहीनता नौकरशाही पर अत्यधिक दबाव तथा लोकतंत्र में चौथे स्तंभ पत्रकारिता का सत्ता का चाकर बनना दिखाया गया है।

इसके साथ ही जातिगत राजनीति वोट बैंक, भेदभाव व निम्नजातियों के प्रति घृणा सुकुल बाबू, जोरावर आदि के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

माध्यम से समझ सकते हैं।

इस प्रकार महाभोज कथ्य के स्तर पर अपनी पैचारिक प्रगतिशीलता, समग्रता व यथार्थपरक चित्रण से हिन्दी उपन्यास परंपरा में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है।

सिर्फ कथ्य के स्तर पर ~~नहिं~~ नहीं बल्कि महाभोज में सरल व सहज पात्रों की सामाजिक- आर्थिक पृष्ठभूमि अनुकूल भाषा, चरित्रों का आनुपातिक महत्व, चरित्र संख्या आदि उपन्यासों की तात्विक दृष्टि से भी शानदार है।

इस प्रकार कहा जा सकता है राजनीतिक व यथार्थवादी उपन्यास परंपरा में महाभोज की महती भूमिका है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये:

10 × 5 = 50

(क) हमारा सृष्टि-संहार-कारक भगवान् तमोगुणजी से जन्म है। चोर, उलूक और लंपटों के हम एकमात्र जीवन हैं। पर्वतों की गुहा, शोकितों के नेत्र, मूर्खों के मस्तिष्क और खलों के चित्त में हमारा निवास है। हृदय के और प्रत्यक्ष, चारों नेत्र हमारे प्रताप से बेकाम हो जाते हैं। हमारे दो स्वरूप हैं, एक आध्यात्मिक और एक आधिभौतिक जो लोक में अज्ञान और अंधेरे के नाम से प्रसिद्ध हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) तुम मेरे सम्पूर्ण जीवन के प्रयत्नों को, अपने वंश के भविष्य को एक युवती के मोह में नष्ट कर देना चाहते हो! महापण्डित चाणक्य ने कहा है, "आत्मनं सततं रक्षेत दारैरपि धनैरपि।" पुत्र, स्त्री भोग्य है। मति-भ्रम होने पर मोह में पुरुष स्त्री के लिये बलिदान होने लगता है। वत्स, ऐसी ही परिस्थिति में नीतिज्ञ महत्त्वाकांक्षी और परलोककामी पुरुष के लिये नारी को पतन का द्वार कहते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ: प्रस्तुत गद्यावतरण 1945 ई. में प्रगतिवादी रचनाकार यशपाल कृत 'दिव्या' उपन्यास से लिया गया है।

प्रसंग: प्रेम्य व पृथुसेन संवाद के माध्यम से भोगवादी नज़रिया स्त्री के प्रति यहाँ स्पष्ट हुआ है।

व्याख्या: जब पृथुसेन दिव्या के प्रति प्रेम के संबंध में प्रेम्य को बताता है तो वह उसे समझाता है कि पुरु मेरा उद्देश्य है तुम यहाँ के शासक बनो, न कि एक स्त्री के मोह में पड़कर तुम मेरा संपूर्ण जीवन का परिश्रम व्यर्थ कर दो।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रेस्थ के अनुसार स्त्री को भोग्य बताया गया है। महत्वाकांक्षी व परलोककामी पुरुष के मार्ग में नारी पतन का द्वार है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष:

① यशपाल ने प्रेस्थ के माध्यम से भोगवादी नज़रिये को व्यक्त किया है। जो नारी को उपकरण मात्र समझता है।

② नारी का वस्तुकरण, उसके प्रति शोषण व दमन का ही उदाहरण है।

③ सूत्रवाक्य का प्रयोग - 'पुत्र, स्त्री भोग्य है।'

④ उदाहरण शैली -
"चाणक्य ने कहा है कि -"

⑤ भाषा संस्कृतनिष्ठ व तत्सम परंतु प्रभावमयी है।

⑥ सिमोन द बउआ ने भी नारी पर कहा है कि "औरत पैदा नहीं होती, औरत बनाई जाती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) संसार से तटस्थ रह कर शांति-सुखपूर्वक लोक-व्यवहार-संबंधी उपदेश देने वालों का उतना अधिक महत्त्व हिन्दू धर्म में नहीं है जितना संसार के भीतर घुस कर उसके व्यवहारों के बीच सात्विक विभूति की ज्योति जगाने वालों का है। हमारे यहाँ उपदेशक ईश्वर के अवतार नहीं माने गए हैं। अपने जीवन द्वारा कर्म-सौंदर्य संघटित करने वाले ही अवतार कहे गए हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) उसकी आंखें बन्द हो गयीं और जीवन की सारी स्मृतियाँ सजीव हो-होकर हृदय-पट पर आने लगीं, लेकिन बे-क्रम, आगे की पीछे, पीछे की आगे, स्वप्न-चित्रों की भाँति बेमेल, विकृत और असम्बद्ध। वह सुखद बालपन आया, जब वह गुल्लियाँ खेलता था और माँ की गोद में सोता था। फिर देखा, जैसे गोबर आया है और उसके पैरों में गिर रहा है। फिर दृश्य बदला, धनिया दुलहिन बनी हुई, लाल चुंदरी पहने उसको भोजन करा रही थी। फिर एक गाय का चित्र सामने आया, बिल्कुल कामधेनु-सी। उसने उसका दूध दुहा और मंगल को पिला रहा था कि गाय एक देवी बन गयी और...।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ: उपरोक्त गद्यांश 1936 ई० में यथार्थवादी रचनाकार प्रेमचंद द्वारा रचित प्रसिद्ध कृति 'गोदान' से है।

प्रसंग: गोदान में जब होरी अपने अंतिम समय में मृत्यु के निकट था तबकी उसकी मनःस्थिति का वर्णन है।

व्याख्या:

प्रेमचंद सूक्ष्म मनोविज्ञान से दिखाते हैं कि किस तरह शोषण की व्यवस्था से लड़ते-लड़ते होरी ने अंतत दम तोड़ दिया है। अपनी मृत्यु के पलों में उसकी आँखों के सामने संपूर्ण जीवन के चित्र प्रस्तुत

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

हो रहे हैं। होरी अपने बचपन से लेकर गोबर के यौवन तक का संपूर्ण चित्र सामने देख रहा है।

विशेष:

① मनोविज्ञान का सूक्ष्म वर्णन प्रेमचंद की विशेषता है, जो यहाँ देखी जा सकती है।

② विराम चिन्हों का सार्थक प्रयोग।

③ बिम्बात्मकता का अद्भुत प्रयोग।

④ भाषा सरल व सहज हिन्दुस्तानी शैली

⑤

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) मैला आँचल की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation